

लोकडाउन का मनुष्य जानवर और पर्यावरण पर प्रभाव

" वक्त का फेर है गालिब, आज इंसान

पिंजरे में है और पंछी आज़ाद "

लॉक डाउन अर्थात् किसी कारणवश की गई तालाबंदी। यह एक आपातकालीन व्यवस्था है जिसे लोगों के जीवन को ध्यान में रखते हुए किया गया है। भारत के साथ-साथ विश्व के कई अन्य देशों में कोरोना नामक महामारी से रोकथाम हेतु इसे अपनाया गया। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 24 मार्च को 21 दिन के लोग डाउन की घोषणा की। यह एक ऐतिहासिक कदम था। इसके प्रभाव में आने से पूर्व सरकार ने 1 दिन का 'जनता कर्फ्यू' लगाया था। लॉक डाउन के होने पर आपातकालीन सेवाओं को छोड़कर दूसरी सभी सेवा पर रोक लगा दी जाती है। आज सड़कों पर सन्नाटा पसरा है; नुक्कड़ देखने अब कोई नहीं आता और चाय के ठेले पर ना ही कोई बातचीत करता दिखता है। अगर कुछ है तो सन्नाटा और सन्नाटे को चीरती हुई पुलिस और एंबुलेंस की गाड़ियों के सायरन। यातायात के साधन; दुकानें; फैक्ट्रियां आदि सब बंद हैं। छोटे मजदूर, महिलाएं, दिहाड़ी पर काम करने वाले लोग इस लॉक डाउन से सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। परंतु सरकार ने इनकी मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कई सेवाएं शुरू की हैं। समाज के विभिन्न वर्गों के लोग अपनी क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार जरूरतमंद को कपड़ा रोटी इत्यादि प्रदान कर उनकी सहायता कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश अपनी खूबसूरती; प्रकृति और वातावरण के कारण हर साल पूरी दुनिया के लाखों पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। ना केवल हिमाचल अपितु भारत के अन्य राज्यों में भी लोक डाउन के चलते पर्यटन के क्षेत्र में कमी आई है। जिस कारण अस्थायी बेरोजगारी बढ़ रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था को काफी धक्का लग रहा है। शेयर बाजार आँधे मुंह गिरा है। इस सबके चलते वैश्विक आर्थिक मंदी उत्पन्न हुई है। परंतु निराशा के इस दौर में भी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने अन्य देशों की तुलना में सकारात्मक टिप्पणी की है। प्राइवेट कंपनियों में काम करने वाले लोग जो पहले बहुत कम घर आ पाते थे इस तालाबंदी की कारण " वर्क फ्रॉम होम" के तहत अपने परिवार वालों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिता पा रहे हैं। नई पीढ़ी जो पहले हर समय अपने मोबाइल फोन पर रहती थी; इस तालाबंदी के चलते अब आए दिन कुछ नया करने के लिए प्रेरित रहती है। कोई चित्रकला करके सुबह को शाम कर रहा है तो कोई नाच गाना करके मनोरंजन। घरों में आए दिन नए नए पकवान बनाए जा रहे हैं। आपसी संबंध कहीं मजबूत हो रहे हैं तो कहीं लड़ाई झगड़े और बढ़ रहे हैं। लोगों के मनोरंजन को ध्यान में रखते हुए सरकार ने रामायण एवं महाभारत जैसे पुराणिक धारावाहिक का प्रसाद दोबारा दूरदर्शन पर करवाया है। रेप, गुंडागर्दी, चोरी जैसे तुच्छ हरकतों को लगाम मिली है। स्कूल कॉलेज ने "ऑनलाइन स्टडी" के तहत पढ़ाना शुरू कर दिया है। शहरी जीवन की तुलना में ग्रामीण जीवन की दिनचर्या में कोई ज्यादा अंतर नहीं आया है। " सोशल डिस्टेंसिंग" को ध्यान में रखते हुए फसल

की कटाई की जा रही है। परंतु जिन परिवारों का व्यवसाय शहर से संबंधित था जैसे कि शहर में जाकर दूध , फल, सब्जी इत्यादि बेचना ; इस लॉक डाउन के चलते उन परिवारों की मासिक आय में कटौती हुई है।

आज जब इंसान अपने घरों में रहने के लिए मजबूर है तो यह जानवर आजाद महसूस कर रहे हैं। वन्यजीवों को अत्यंत सुकून प्रदान हुआ है। शहरों में मोर, कस्तूरी बिलाप आए दिन दिखाई दे रहे हैं। मुंबई की समुद्र तट पर डॉल्फिन भी देखी गई। इन वन्य जीवों का यूं इस प्रकार दिखाई देना यह सिद्ध करता है कि शहरों के विकास की गति के चलते प्रकृति जैसे अमूल्य सौगात का मनुष्य अपनी सुविधा की तलाश में किस प्रकार दोहन करता जा रहा था। जो कोरोना दुनिया के लिए काल बन कर आया जिसने हजारों लोगों को अपना निवाला बना लिया वह इस प्रकृति के लिए वरदान साबित हुआ। अब सुबह नींद अलार्म से नहीं परिंदों की चहचहाहट से खुलती है। चाय का मग लेकर अगर बालकनी में जाएं तो नजर एक ऐसे आसमान पर पड़ती है जो अजनबी नजर आता है; इतना नीला और साफ आसमान तो दिल्ली एनसीआर जैसे शहरों में रहने वाले बहुत से लोगों ने शायद पहली बार देखा हो। सड़कें वीरान हैं पर मंजर साफ नजर आता है। सड़क किनारे लगे फूल पौधे एकदम साफ और गुलजार हैं। जिस यमुना गंगा को सरकार हजारों करोड़ों रुपए खर्च कर भी साफ करने में असमर्थ रही तालाबंदी के 21 दिनों ने वह कर दिखाया। ध्वनि वायु हर प्रकार के प्रदूषण में कमी देखी गई है। चीन में कार्बन उत्सर्जन में 25% की कमी हुई है। लौक डाउन के बाद एयर क्वालिटी इंडेक्स 90 अधिकतम और 40 न्यूनतम पर रहा। वैज्ञानिकों के अनुसार ओजोन परत का क्षरण हुआ है वह भी हिल हो रहा है अर्थात् दुरुस्त हो रही हैं ओजोन परत। एक वाक्य में कहें तो प्रकृति के लिए "संजीवनी" बना कोरोना। लॉकडाउन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं, परंतु उद्देश्य कोरोना से लड़ना और उसे हराना ही है। जब सरकार अपने अर्थव्यवस्था की चिंता न करते हुए हमारे हित के बारे में सोचते हुए इतना बड़ा कदम उठा रही है तो, यह हमारा भी कर्तव्य है की हम इसका पालन करें। घर पर रहें, लोगों से दूरी बनायें रखें, खुद भी स्वास्थ्य रहें और दूसरों को प्रेरित करें। ऐसी संकट की घड़ी में सबको इसका डटकर सामना करना है।

पहुंच गई है गिनती हजारों में इसे लाख मत होने दो।

रुक जाओ अपने घरों में वतन को राख मत होने दो।।